License Information

Study Notes (Biblica) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Study Notes (Biblica)

इब्रानियों 1:1–4

इब्रानियों की पुस्तक नए नियम की अन्य पत्रियों की तरह शुरू नहीं होती। इसमें पाठकों के लिए अभिवादन या लेखक का उल्लेख नहीं है।

इसके बजाय यह बताता है कि परमेश्वर के पुत्र कौन हैं। यीशु सबसे स्पष्ट और सर्वोत्तम तरीके से परमेश्वर को प्रकट करते हैं।

सारी सृष्टि उनके द्वारा रची गई थी, वे सभी इसलिए अस्तित्व में बनी रहती हैं क्योंकि वे इसकी अनुमति देते हैं। यीशु ने लोगों के लिए पाप की शक्ति से मुक्त होना संभव बनाया। यह तब होता है जब लोग उन पर विश्वास करते हैं।

फिर यीशु पिता के पास लौट गए। परमेश्वर के पुत्र परमेश्वर के बगल में सम्मान के स्थान पर विराजमान हैं। उनके पास स्वर्गदूतों से अधिक अधिकार है।

इब्रानियों 1:5–14

यीशु परमेश्वर के स्वर्गदूतों से महान हैं। इब्रानियों के लेखक ने इसे कई तरीकों से दिखाने के लिए पुराने नियम से शब्दों का उपयोग किया।

स्वर्गदूत परमेश्वर के सेवक हैं। यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं। स्वर्गदूत परमेश्वर की आराधना करते हैं। परमेश्वर के पुत्र की आराधना की जाती है। स्वर्गदूत राजा की सेवा करते हैं। परमेश्वर के पुत्र राजा हैं। स्वर्गदूतों की रचना की गई थी। परमेश्वर के पुत्र ने सभी चीजों की रचना की। जो कुछ भी परमेश्वर ने रचा है, वह बदल जाएगा। परमेश्वर के पुत्र सदा के लिए एक समान रहते हैं। स्वर्गदूत संदेशवाहक हैं जो लोगों की सेवा करते हैं। यीशु वह हैं जो लोगों को बचाते हैं। हर प्रकार से, यीशु परमेश्वर की सारी सृष्टि से महान हैं।

इब्रानियों 2:1–9

मूसा की व्यवस्था परमेश्वर की प्रजा को दी गई थी। कई यहूदी मानते थे कि परमेश्वर ने स्वर्गदूतों का उपयोग करके यह व्यवस्था दी थी।

जब इस्राएली ने इस व्यवस्था का पालन नहीं किया, तो वे वाचा के श्रापों का सामना करते थे। यीशु द्वारा लाया गया उद्धार का संदेश व्यवस्था से भी महान था। इसलिए यीशु के संदेश को स्वीकार करना सीनै पर्वत की वाचा का पालन करने से भी अधिक महत्वपूर्ण था।

यीशु ने उद्धार के सुसमाचार का संदेश सुनाया था। उनके शिष्य और प्रेरित इस संदेश को दूसरों तक फैलाते थे। परमेश्वर ने दिखाया कि यीशु का संदेश विश्वसनीय था। उन्होंने यीशु के चमत्कारों के माध्यम से यह सत्य साबित किया।

पवित्र आत्मा का विश्वासियों में कार्य भी यह सत्य सिद्ध करता था।

लोग स्वर्गदूतों की तुलना में कम शक्ति और अधिकार रखते हैं। जब यीशु पृथ्वी पर रहते थे, उन्होंने अपनी बहुत सी शक्ति और अधिकार त्याग दिए थे। यही अर्थ है कि यीशु ने स्वयं को स्वर्गदूतों से नीचे कर लिया। लेकिन उनके मृत्यु के बाद परमेश्वर ने उन्हें विजय में उठाया। यही कारण है कि इब्रानियों के लेखक ने मुकुट की बात की। यीशु वह राजा हैं जो विजय का मुकुट पहनते हैं। उनके पुनरुत्थान के बाद से, उनके पास फिर से सारी शक्ति और अधिकार है। वे आने वाले संसार में पूरी तरह से शासन करेंगे। यही नई सृष्टि है।

इब्रानियों 2:10–18

यीशु, जो परमेश्वर के पुत्र हैं, परमेश्वर की संतानों के सबसे बड़े भाई हैं। यीशु पहले मानव थे जो मृत्यु के भय के दास नहीं थे। उन्हें पता था कि वे अनन्त जीवन के साथ मृतकों में से उठेंगे। वह शैतान की शक्ति के दास नहीं थे। उन्होंने पाप की शक्ति से मुक्त जीवन जिया।

ये सभी बातें उद्धार का अर्थ हैं। चूंकि यीशु ने पहले इन सबका अनुभव किया है, वे दूसरों को इनके माध्यम से मार्गदर्शन कर सकते हैं। यीशु ने पृथ्वी पर एक पूर्ण मानव जीवन जिया। ऐसा कुछ भी नहीं है जो मनुष्य अनुभव करते हैं और वे उसे समझ नहीं सकते। जो उन्होंने एक मानव के रूप में सहा, उसने उन्हें पूर्ण या संपूर्ण बना दिया। इसने उन्हें मनुष्यों की ठीक उसी तरह मदद करने में सक्षम बनाया, जैसे उन्हें मदद की आवश्यकता होती है।

एक मनुष्य के रूप में, यीशु ने महायाजक का कार्य किया। उन्होंने लोगों के पापों के लिए बलिदान चढ़ाया। वह बलिदान स्वयं उनका अपना था। उनकी मृत्यु ने उन सभी के लिए उद्धार संभव बना दिया जो उन पर विश्वास करते हैं।

इब्रानियों 3:1–19

इब्रानियों के लेखक ने मूसा को परमेश्वर के घर में एक विश्वासयोग्य सेवक के रूप में वर्णित किया। परमेश्वर का घर परमेश्वर के परिवार के बारे में बात करने का एक तरीका था। यह पवित्र तम्बू और मंदिर का वर्णन करने का भी एक तरीका था।

परमेश्वर के घर में, यीशु एक सेवक से अधिक हैं। वे पुत्र हैं। यीशु के माध्यम से, परमेश्वर का घर केवल पवित्र तम्बू या मंदिर से अधिक है। यह उन सभी से बना है जो यीशु का विश्वासपूर्वक और आशा के साथ अनुसरण करते हैं।

इस्राएल की कहानी यीशु के अनुयायियों के लिए एक चेतावनी और उदाहरण है। बार-बार इस्राएलियों ने मूसा की बात सुनने से इनकार किया। बार-बार उन्होंने परमेश्वर के वचन का पालन करने से इनकार किया। परिणामस्वरूप, उनमें से कई उस देश में प्रवेश नहीं कर पाए जो परमेश्वर ने उन्हें वादा किया था।

उनमें से कुछ जिन्होंने इब्रानियों का संदेश सुना, यहूदी विश्वासी थे। वे मूसा और मूसा की व्यवस्था का सम्मान करते थे। लेकिन इब्रानियों के लेखक ने उन्हें यीशु के प्रति और भी अधिक समर्पित होने का आग्रह किया। उन्होंने यीशु को उनका प्रेरित और महायाजक कहा। उन्हें मसीह में अपनी आशा और विश्वास को बनाए रखना चाहिए था।

इब्रानियों 4:1–13

बहुत समय पहले परमेश्वर ने अपने लोगों इस्राएल को उनके विश्राम में प्रवेश करने के लिए आमंत्रित किया। यह सुसमाचार मूसा के समय में कहा गया था।

यहोशू ने इस्राएल के लोगों को कनान देश में प्रवेश कराया। इस समय के दौरान उन्हें दासत्व से विश्राम मिला। लेकिन सच्चा और स्थायी विश्राम केवल यीशु में विश्वास करने और उनका अनुसरण करने से ही आता है। यह वह विश्राम है जिसका आनंद लेने के लिए परमेश्वर सभी को आमंत्रित करते हैं।

परमेश्वर उन सभी चीज़ों के बारे में सब कुछ देखते और जानते हैं जिन्हें उन्होंने बनाया है। वे अपने वचनों और यीशु के संदेश का उपयोग लोगों के हृदयों में क्या है, यह दिखाने के लिए करते हैं। इस प्रकार, परमेश्वर का वचन एक तलवार के समान है जो जीवित और सक्रिय है।

यह इब्रानियों का सन्देश सुनने वाले विश्वासियों को चेतावनी देने और उत्साहित करने का एक तरीका था। लेखक चाहता था कि वे यीशु की आज्ञा का पालन करने के लिए हर संभव प्रयास करें।

इब्रानियों 4:14–5:10

परमेश्वर ने यीशु को महायाजक नियुक्त किया। जब वे पृथ्वी पर रहते थे, यीशु उन सभी चीजों से गुजरे जिनसे सभी लोग गुजरते हैं। वे एक बच्चे के रूप में जन्मे और जैसे-जैसे बड़े हुए, उन्होंने चीजें सीखीं। कभी-कभी वे कमजोर और पीड़ित थे। कभी-कभी उन्हें प्रलोभन और परीक्षा का सामना करना पड़ा, लेकिन उन्होंने कभी पाप नहीं किया। कभी-कभी उन्होंने कष्ट सहा।

अपने जीवन के दौरान, उन्होंने एक मनुष्य के रूप में परमेश्वर की आज्ञा मानना सीखा। मनुष्यों के जीवन के बारे में उनका ज्ञान सम्पूर्ण है। यही वह अर्थ है कि वह सिद्ध किए गए। अपने याजक के रूप में, यीशु विश्वासियों के साथ कोमलता से पेश आते हैं। यह विश्वासियों को परमेश्वर के पास आने का साहस देता है। विश्वासियों को भरोसा हो सकता है कि परमेश्वर उन्हें अनुग्रह और दया दिखाएंगे।

इब्रानियों 5:11–6:12

इब्रानियों के लेखक ने विश्वास में बढ़ने का अर्थ समझाया। जब कोई यीशु का अनुसरण करना शुरू करता है, तो वे एक आध्यात्मिक बच्चे की तरह होते हैं। वे यीशु के बारे में बुनियादी शिक्षाएँ सीखते हैं। और वे आध्यात्मिक रूप से बढ़ते रहते हैं।

विश्वास और धैर्य के साथ उन्हें अपने जीवनभर सीखते रहना चाहिए। यदि वे यह समझना बंद कर देते हैं कि यीशु उन्हें क्या सिखाना चाहते हैं, तो वे आत्मिक रूप से बढ़ना बंद कर देते हैं। लेखक ने विश्वास से गिर जाने की भी बात की। यह तब होता है जब विश्वासी अपने जीवन में परमेश्वर का प्रकाश नहीं चाहते।

वे अब आने वाले युग की आशा के साथ प्रतीक्षा नहीं करते। आने वाला युग नए सृजन के बारे में बात करने का एक और तरीका था। वे अब नहीं चाहते कि पवित्र आत्मा उनमें कार्य करें। यह अपराधी और अधार्मिक तरीकों से जीवन जीने की ओर ले जाता है। लेखक ने उन तरीकों को एक खेत के समान वर्णित किया जो कांटे और खरपतवार उत्पन्न करता है।

लेखक चाहते थे कि विश्वासी एक ऐसे खेत की तरह हों जो अच्छी फसल उत्पन्न करता है। उनमें से कुछ पहले से ही इस तरह से यह कर रहे थे कि उन्होंने दिखाया कि वे परमेश्वर से प्रेम करते हैं।

इब्रानियों 6:13–20

परमेश्वर ने अब्राहम के साथ अपनी वाचा में अब्राहम के साथ एक प्रतिज्ञा की थी।

इब्रानियों के पत्र को पढ़ने वाले विश्वासियों को यह पता था। उन्हें यह भी पता था कि परमेश्वर ने अब्राहम से किया हुआ वादा पूरा किया था। उन्होंने अब्राहम को एक बहुत बड़े परिवार से आशीर्वादित किया था जो इस्राएल राष्ट्र बन गया।

इब्रानियों के लेखक ने इस कहानी का उपयोग पाठकों को परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं की याद दिलाने के लिए किया। परमेश्वर कभी झूठ नहीं बोलते। वे हमेशा अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करते हैं। दुनिया के लिए उनका उद्देश्य नहीं बदलता। उनका उद्देश्य है कि उनकी सृजन उनके साथ सदा शांति में रहे।

यह वह आशा है जो विश्वासियों के पास है। यह आशा निश्चित और सुरक्षित है क्योंकि यह यीशु के कार्य पर आधारित है।

इब्रानियों 7:1–28

इब्रानियों के लेखक ने मलिकिसिदक और लेवी के बारे में बात की ताकि यीशु के याजक के रूप में कार्य का वर्णन कर सकें।

परमेश्वर ने मूसा की व्यवस्था में यहूदी पुरोहित प्रणाली स्थापित की। लेवी के गोत्र के पुरुष पुरोहित के रूप में सेवा करते थे। वंशावली से हारून के पुरुष महायाजक के रूप में सेवा करते थे। जब एक महायाजक की मृत्यु हो जाती थी, तो हारून के वंशावली की एक और पुरुष उसकी जगह लेता था।

फिर भी भजन संहिता 110 के पद 4 ने घोषणा की कि मसीह मलिकिसिदक की तरह सदा के लिए याजक होंगे। मलिकिसिदक यहूदी याजकीय प्रणाली का हिस्सा नहीं थे। वे लेवी के गोत्र से नहीं थे। मलिकिसिदक के परिवार की वंशावली पुराने नियम में दर्ज नहीं है। इब्रानियों के लेखक के लिए, इसका अर्थ था कि मलिकिसिदक का न तो कोई आरंभ था और न ही कोई अंत। इस प्रकार यह समझा जाता है कि उनकी याजक सेवा सदा के लिए रहती है।

यीशु भी लेवी के गोत्र से नहीं थे। परमेश्वर के पुत्र के रूप में, यीशु का कोई आरंभ और कोई अंत नहीं है। उनका याजक के रूप में सेवा कार्य भी सदा के लिए है। यीशु याजक इसलिए नहीं बने क्योंकि यहूदी याजकीय प्रणाली ने उन्हें अनुमति दी। वे याजक बने क्योंकि परमेश्वर ने वादा किया था कि वे होंगे। वे याजक बने क्योंकि उनके पास शक्तिशाली अनंत जीवन है जिसे मृत्यु नष्ट नहीं कर सकती।

इस प्रकार वह यहूदी पुरोहित प्रणाली को पूरा करते हैं। अब किसी और को परमेश्वर और लोगों के बीच पुरोहित के रूप में सेवा करने की आवश्यकता नहीं है। अब और पाप बलिदान की आवश्यकता नहीं है ताकि लोगों को क्षमा मिल सके। यीशु का बलिदान लोगों को सदा के लिए पाप की शक्ति से बचाता है।

इब्रानियों 8:1–13

परमेश्वर ने मूसा के माध्यम से इस्राएल के लोगों के साथ सीनै पहाड़ वाचा स्थापित की। इब्रानियों के लेखक ने इसे पुरानी वाचा और पहली वाचा दोनों कहा। यह उन कानूनों पर आधारित थी जिनका इस्राएली को पालन करना था। यहूदी पुरोहिती व्यवस्था उस वाचा का हिस्सा थी।

मंदिर के बनने से पहले, इस्राएली याजक पवित्र तम्बू में सेवा करते थे। तम्बू और मंदिर स्वर्ग में जो है, उसके आधार पर बनाए गए थे। वे उस पवित्र स्थान की प्रतिकृति के रूप में बनाए गए थे जहाँ परमेश्वर राजा के रूप में शासन करते हैं। वहीं यीशु महायाजक के रूप में अपना कार्य करते हैं। वे परमेश्वर की नई वाचा के साथ उनके लोगों के मध्यस्थ और महायाजक के रूप में सेवा करते हैं।

नई वाचा लोगों के परमेश्वर के नियमों का पालन करने पर निर्भर नहीं करता। यह परमेश्वर के द्वारा लोगों के हृदय के अंदर से परिवर्तन करने पर निर्भर करता है। सीनै पहाड़ की वाचा समाप्त हो गई है क्योंकि परमेश्वर ने अब नई वाचा बना ली है।

इब्रानियों 9:1–28

सीनै पहाड़ की वाचा एक वसीयत की तरह थी जो मृत्यु के समय प्रभावी होती थी। यह मृत्यु लोगों की नहीं थी बल्कि उन पशुओं की थी जिन्हें परमेश्वर ने प्रदान किया था। इससे यह दिखाया गया कि परमेश्वर लोगों से प्रेम करते हैं और नहीं चाहते कि वे अपने पापों के कारण मरें।

सीनै पहाड़ की वाचा हमेशा के लिए नहीं थी। यह उन महान चीजों का संकेत था जो आने वाली थीं। यह मसीह और उनके कार्य की ओर संकेत करती थी। नई वाचा भी मृत्यु के समय प्रभावी हुई। यह मृत्यु लोगों या जानवरों की नहीं थी, बल्कि यीशु मसीह की थी। यीशु ने नई वाचा स्थापित करने के लिए स्वयं को बलिदान कर दिया। यह दिखाता है कि परमेश्वर लोगों से कितनी गहराई से प्रेम करते हैं।

सीनै पहाड़ की वाचा में, लोगों पर पशु के रक्त का छिड़काव किया गया था। इससे उन्हें शुद्ध माना जाता था। इससे वे पवित्र तम्बू में प्रवेश करने योग्य बन जाते थे। नई वाचा में, लोगों पर यीशु के रक्त का छिड़काव किया जाता है। विश्वासियों को वास्तव में यीशु का वास्तविक रक्त अपने ऊपर महसूस नहीं होता। यह एक तरीका है यह बताने का कि जब यीशु लोगों को बचाते हैं तो आध्यात्मिक रूप से क्या होता है।

यीशु का लहू जानवरों के लहू से कहीं अधिक शक्तिशाली है। उनका लहू उन पर विश्वास करने वालों को पूरी तरह से शुद्ध और सदा के लिए स्वीकार्य बनाता है। यीशु उन्हें क्षमा करते हैं। वह उनके मन और हृदय पर पाप और बुराई के प्रभाव को ठीक करते हैं। इब्रानियों के लेखक ने इसे अपराधबोध की भावनाओं को धोने के रूप में वर्णित किया है। यीशु लोगों को परमेश्वर के साथ पूरी तरह और सदा के लिए रहने योग्य बनाते हैं। यही कारण है कि जब यीशु लौटेंगे तो उनकी मुक्ति को पूर्ण करेंगे।

इब्रानियों 10:1–25

अपने पुरोहित के रूप में कार्य करते हुए, यीशु ने क्रूस पर अपने जीवन का बलिदान दिया। जो उन पर विश्वास करते हैं, उनके पाप सदा के लिए क्षमा कर दिए जाते हैं।

यही है कि कैसे यीशु ने पाप की शक्ति को तोड़ा। और उन्होंने मृत्यु की शक्ति को तब तोड़ा जब परमेश्वर ने उन्हें मृतकों में

से जी उठाया। भविष्य में परमेश्वर के सभी शत्रु पूरी तरह से यीशु के नियंत्रण में होंगे।

पवित्र तम्बू मंदिर में, केवल महायाजक ही परमेश्वर के निकट हो सकते थे। यह अति पवित्र स्थान में होता था। इसे अन्य कमरों से एक पर्दे द्वारा अलग किया गया था। अति पवित्र स्थान उस स्थान की प्रतिकृति थी जहाँ परमेश्वर स्वर्ग में शासन करते हैं।

अपने पुनरुत्थान के बाद, यीशु स्वर्ग में उस वास्तविक स्थान पर गए जहाँ परमेश्वर शासन करते हैं। वे वहाँ बने रहते हैं। वे अपने अनुयायियों के लिए भी परमेश्वर की उपस्थिति में होना संभव बनाते हैं। उनके अनुयायी यीशु पर विश्वास करके परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करते हैं। यीशु का शरीर एक पर्दे के समान है जिसके माध्यम से विश्वासियों का प्रवेश होता है। वे इसके माध्यम से परम पवित्र स्थान में जाते हैं जहाँ परमेश्वर हैं।

इब्रानियों के लेखक चाहते थे कि उनके पाठक परमेश्वर के पास साहसपूर्वक आएं। उन्हें परमेश्वर से डरने की आवश्यकता नहीं थी। उन्हें एक-दूसरे को प्रोत्साहित करना था कि वे परमेश्वर के निकट रहें। पापों की क्षमा और परमेश्वर की उपस्थिति में होना विश्वासियों को आशा से भर देता है। यह उन्हें अच्छे कार्य करने और दूसरों के प्रति प्रेम दिखाने की इच्छा से भर देता है।

इब्रानियों 10:26–39

जिन विश्वासियों ने इब्रानियों का पत्र प्राप्त किया था, उन्हें अपने विश्वास के कारण बुरा व्यवहार सहना पड़ा था। अविश्वासियों ने उनके बारे में बुरा कहा, उनकी संपत्ति छीन ली और उन्हें जेल में डाल दिया। फिर भी, वे विश्वासियों ने अपने कष्टों के बावजूद यीशु के प्रति विश्वास बनाए रखा।

इब्रानियों के लेखक चाहते थे कि वे परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बने रहें। फिर जब यीशु वापस आएंगे, तो वे उस आनंद का अनुभव करेंगे जो परमेश्वर ने उन्हें देने का वादा किया है। लेखक नहीं चाहते थे कि वे अपना विश्वास छोड़ दें। ऐसा तब होगा जब वे जानबूझकर पाप करते रहेंगे। ऐसा तब होगा जब वे कहेंगे कि वे यीशु को नहीं जानते। उन्हें ऐसा करने का प्रलोभन था ताकि उनके साथ बुरा व्यवहार करना बंद हो जाए।

लेकिन जो विश्वासी ऐसा करते हैं, वे अब परमेश्वर के पास साहसपूर्वक नहीं आते। इसके बजाय वे न्याय के दिन के डर में प्रतीक्षा करते हैं। वे उन सभी लोगों के समान हैं जो परमेश्वर की कृपा प्राप्त नहीं करना चाहते। ऐसे लोग मृत्यु से बचाए जाने से इनकार करते हैं। परमेश्वर लोगों को उनके उपहार स्वीकार करने के लिए मजबूर नहीं करते।

इब्रानियों 11:1–22

परमेश्वर में विश्वास इस बात पर आधारित है कि वे अस्तित्व में हैं और उन्होंने संसार की रचना की है। उनके पास यह शक्ति है कि जब वे बोलते हैं तो चीजें अस्तित्व में आ जाती हैं। वे आदेश देते हैं और उनके वचनों पर विश्वास किया जा सकता है।

इसीलिए अब्राहम, सारा, इसहाक, याकूब और यूसुफ ने परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर विश्वास किया। उन्होंने विश्वास किया कि परमेश्वर में वह सामर्थ्य है कि जो वह कहते हैं, उसे पूरा कर सकते हैं। उन्होंने यह भी विश्वास किया कि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करने में सच्चे रहेंगे।

परमेश्वर में विश्वास आशा पर भी आधारित है। यह इस आशा पर आधारित है कि परमेश्वर भविष्य में क्या करेंगे। नूह ने विश्वास किया कि परमेश्वर उनके परिवार को आने वाली बाढ़ से बचाएंगे। अब्राहम और सारा ने विश्वास किया कि परमेश्वर उन्हें और उनके बच्चों को एक बेहतर देश में ले जाएंगे।

उनकी आशा खतरे में पड़ सकती थी जब इसहाक को लगभग मार दिया गया था। लेकिन उनकी आशा उन पर आधारित थी जो मृतकों को जीवित करने की शक्ति रखते हैं। यह उस स्थान पर रहने पर भी आधारित थी जहाँ वे संबंधित थे। यह उस नगर और स्वर्गीय देश में होगा जिसे उन्होंने उनके लिए तैयार किया है। ये परमेश्वर के राज्य का वर्णन करने के तरीके थे।

जब लोग परमेश्वर पर विश्वास करते हैं तो यह उन्हें प्रसन्न करता है। हनोक और हाबिल इसके उदाहरण थे। उनके दृढ़ विश्वास के उदाहरण उनके जीवनकाल के बाद भी बने रहे।

इब्रानियों 11:23–40

लेखक ने इस्राएल के अतीत के कई लोगों का उल्लेख किया जिन्होंने परमेश्वर में विश्वास किया। उन्होंने अपने परिवारों और अपने देशों में कठिनाइयों का सामना किया। उनमें से कई ने अपने शरीर में भी बहुत कष्ट सहे। उन्हें इसलिए कष्ट सहना पड़ा क्योंकि उन्होंने पापपूर्ण और बुरे तरीकों में जीने से इनकार कर दिया।

उनके पास यह निश्चित आशा थी कि परमेश्वर उन्हें पाप, मृत्यु और बुराई से बचाएँगे। यही कारण है कि लेखक ने मूसा को मसीह के कारण कष्ट सहते हुए वर्णित किया। मूसा यीशु से सैकड़ों वर्ष पहले जीवित थे। लेकिन उनका विश्वास और आशा यीशु के जीवन और कार्य के माध्यम से पूर्ण होगी।

इस सूची में लोगों का विश्वास मृत्यु का सामना करने पर भी नहीं रुका। उन्होंने जो आशा की थी और जिस पर विश्वास किया था, उसे पूरी तरह से प्राप्त नहीं किया। लेकिन उनका विश्वास इतना प्रबल था कि उन्होंने परमेश्वर पर भरोसा किया कि वे उन्हें मृतकों में से जीवित करेंगे। पृथ्वी पर उनके जीवन

के दौरान उनकी आशा पूरी और परिपूर्ण नहीं हुई थी। यह यीशु के जीवन और कार्य के माध्यम से पूर्ण होगी।

इब्रानियों 12:1–17

इब्रानियों के लेखक ने विश्वास के जीवन को एक लंबी यात्रा या दौड़ के रूप में वर्णित किया। जो लोग पहले ही विश्वासपूर्वक दौड़ चुके हैं, वे सभी विश्वासियों के चारों ओर हैं। वे साक्षी का विशाल बादल हैं।

दौड़ को अच्छी तरह से दौड़ने के लिए, कई चीजें आवश्यक हैं। सबसे पहले, विश्वासियों को किसी भी चीज़ से मुक्त होना चाहिए जो उन्हें यीशु के प्रति विश्वासयोग्य होने से रोकती है। दूसरा, विश्वासियों को दौड़ते रहना चाहिए। इसका अर्थ है कि उन्हें धीरज और प्रतिबद्ध रहना चाहिए जब तक वे जीवित हैं। तीसरा, विश्वासियों को यीशु की ओर देखते रहना चाहिए। परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहने के यीशु के उदाहरण को लगातार याद करना उन्हें आगे बढ़ने की शक्ति देता है।

इसके बाद, उन्हें विश्वास के जीवन के लिए प्रशिक्षण के रूप में कठिन समय को स्वीकार करना चाहिए। कभी-कभी कठिन समय इसलिए आता है क्योंकि विश्वासियों को यीशु का अनुसरण करने के लिए बुरा व्यवहार सहना पड़ता है। कभी-कभी यह परमेश्वर के न्याय के कारण आता है। परमेश्वर अपने बच्चों से प्रेम करते हैं, इसलिए वे पाप के विरुद्ध न्याय लाते हैं। वे इसे अपने बच्चों की पवित्र जीवन में सहायता के लिए लाते हैं। विश्वासियों को पाप के विरुद्ध संघर्ष करते हुए और पवित्र बनने का प्रयास करते हुए परमेश्वर की कृपा की आवश्यकता होती है।

एसाव को आशा थी कि वह इसहाक की आशीर्वाद प्राप्त करेंगे। यह आशीर्वाद भविष्य में उन्हें मिलता। लेकिन एसाव धैर्यवान नहीं थे और न ही उस चीज़ के लिए मेहनत करने के लिए प्रतिबद्ध थे जिसकी उन्हें आशा थी। उन्होंने भविष्य की आशीर्वाद को तुरंत मिलने वाली किसी चीज़ के बदले में दे दिया। यह कहानी उत्पत्ति 25:29–34 में बताई गई है।

यीशु ने विश्वासियों को एक अलग उदाहरण दिया। यीशु एक वफादार जीवन जीते हुए कष्ट सहने के लिए तैयार थे। वे निरंतर आगे बढ़ते रहे। वे अपने परमपिता परमेश्वर के साथ रहने के आनंद की ओर देख रहे थे।

इब्रानियों 12:18–29

इब्रानियों के लेखक ने पुरानी वाचा और नए वाचा के बीच के अंतर को वर्णित किया। लेखक ने यह दो पहाड़ों की तुलना करके किया। पहला था सीनै पहाड़ और यह सीनै वाचा का चित्रण था। उस पहाड़ पर, लोग परमेश्वर की पवित्रता से डरते थे। केवल मूसा ही परमेश्वर के निकट जा सकते थे।

दूसरा पहाड़ सिय्योन पहाड़ था। इसे मोरिय्याह पहाड़ के नाम से भी जाना जाता था और यह नए वाचा का प्रतीक था। लेखक ने इसे परमेश्वर के नगर के बारे में बात करने के तरीके के रूप में उपयोग किया। उन्होंने उस नगर को स्वर्गीय यरूशलेम कहा। यह नया यरूशलेम का एक और नाम है।

इस्राएल के अतीत के अब्राहम और अन्य विश्वासयोग्य लोग उस नगर की प्रतीक्षा कर रहे थे। उस नगर में लोग परमेश्वर की पवित्रता से नहीं डरते। क्योंकि वे यीशु में विश्वास करते हैं, वे परमेश्वर के निकट आने के लिए स्वतंत्र हैं। वह नगर परमेश्वर के राज्य का हिस्सा है। इसे कभी भी हिलाया या नष्ट नहीं किया जा सकता। परमेश्वर के राज्य में सहभागी होने से परमेश्वर के लोग उनका धन्यवाद करते हैं और उनकी आराधना करते हैं।

इब्रानियों 13:1–19

लेखक ने विश्वासियों को याद दिलाया कि उन्हें क्या करते रहना चाहिए। सबसे पहली बात थी एक-दूसरे से प्रेम करना। इसमें उन लोगों का स्वागत करना शामिल था जिन्हें वे नहीं जानते थे। इसमें जेल में बंद लोगों और जिनके साथ बुरा व्यवहार किया गया था, उनकी देखभाल करना शामिल था। इसमें विवाह में विश्वासयोग्य रहना शामिल था। इसमें अधिक से अधिक धन चाहने के बजाय परमेश्वर पर भरोसा करना शामिल था कि वे उनकी आवश्यकताओं को पूरा करेंगे।

लेखक ने पाठकों को विश्वासयोग्य कलीसिया के अगुवों से प्रेम दिखाने की भी याद दिलाई। वे यह प्रेम उनके लिए प्रार्थना करके और उनके धार्मिक जीवन के उदाहरण का अनुसरण करके दिखा सकते थे। वे अगुवों को प्रसन्नता देकर ऐसा कर सकते थे, न कि समस्याएँ उत्पन्न करके।

विश्वासियों को परमेश्वर की अनुग्रह की सच्ची शिक्षा को भी थामे रहना चाहिए। भोजन के बारे में यहूदी नियमों का पालन करने से उन्हें वह नहीं मिलेगा जिसकी वे आशा कर रहे थे। वे परमेश्वर के राज्य के नगर में सदा के लिए रहने की आशा कर रहे थे। लोग केवल यीशु में विश्वास के माध्यम से परमेश्वर के नगर में प्रवेश कर सकते हैं। उउन्हें यीशु में विश्वास करने के कारण कष्ट सहने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। और वे निरंतर स्तुति कर सकते हैं क्योंकि परमेश्वर यीशु के माध्यम से अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करेंगे।

इब्रानियों 13:20–25

लेखक के अंतिम अभिवादन से पहले, इब्रानियों की पुस्तक एक आशीर्वाद के साथ समाप्त होती है। यह यीशु के उस कार्य पर आधारित है जिससे उन्होंने एक नया वाचा स्थापित किया जो सदा के लिए रहेगा।

यीशु प्रभु हैं। वह चरवाहा हैं जो परमेश्वर के लोगों की देखभाल करते हैं (यूहन्ना 10:1–18)।

जिस परमेश्वर ने यीशु को मृतकों में से वापस लाया, वही विश्वासियों में भी कार्य कर रहे हैं। वे उन्हें वह सब कुछ देते हैं

इब्रानियों *13:20–25*

जिसकी उन्हें उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए आवश्यकता होती है। उन्हें वह चुनाव करना चाहिए जो परमेश्वर चाहते हैं। यह संभव है क्योंकि यीशु उनकी सहायता करते हैं।

यीशु मसीह हैं जो सदा के लिए महिमा के योग्य हैं।